आर्योदय

ARYODAYE

Read Aryodaye on line -- www.aryasabhamauritius.mu

Aryodaye No. 331 | ARYA SABHA MAURITIUS | *16th Apr. to 25th Apr. 2016*

LET US LOOK AT EVERYONE WITH A FRIENDLY EYE

- VEDA

हे प्रभु संसार के उद्धार के लिए दैव्य जन प्राप्त कारइये

O Seigneur ! Entourez Nous De Grandes Âmes Pour Le Salut De L'humanité

ओ३म् त्वं दूतो अमर्त्य आ वहा दैव्यं जनम्।
श्रृण्वन्विप्रस्य सुष्टुतिम् ।।

ऋग्वेद ६/१६/६

Om ! Twam duto amartya ā vahā dayviam janam.
Shrinvan viprasya sushtutim.

Rig Veda 6/16/6

Glossaire / Shabdārtha :

(O Seigneur ! O Dieu !)

Amartyaha – immortel – c'est un attribut de Dieu et tout à fait contraire à la nature humaine car l'homme est mortel ; **viprasya** – nous les gens intelligents, nous t'offrons; **sushtutim** – une sincère prière ; **shrinvan** – nous espérons qu'elle sera entendue par toi ; **ā vahā** – Que nous soyons entourés; **dutaha** – des âmes qui ont les connaissances mondaines et spirituelles ; **dayviam janam** – que ces grandes âmes nous enseignent la vertu, l'ordre, la discipline, la moralité, et les valeurs humaines, et nous mènent vers la spiritualité et la paix.

Avant-propos

Aujourd'hui, plus que jamais, le monde se trouve dans une grande tourmente. On est dans l'attente des gens de bonne volonté, des érudits pour qu'on puisse sortir du gouffre et retrouver la sérénité.

Sous l'emprise de l'immoralité, de l'égoïsme, du fanatisme religieux ou de l'ambition démesurée, certains se comportent comme des démons. Dans plusieurs pays le terrorisme sème la destruction, la désolation, et le désespoir. Petit à petit le monde se transforme en enfer.

Face à ce tumulte, ce verset est un appel des sages et de ceux en détresse à Dieu pour la délivrance de l'humanité de ce fléau. C'est un cri du cœur.

Beaucoup de pays demeurent impuissants face à la montée de la violence. Leurs peuples et surtout les femmes, les enfants, les vieux, les malades et les invalides sont les plus vulnérables et souffrent atrocement. Ils sont torturés, privés de nourriture, de l'eau, des soins médicaux et d'autres nécessités de la vie ou massacrés.

Cette triste situation entraine dans son sillage la famine, les maladies et la recrudescence des épidémies. Des milliers meurent de faim ou par l'absence de soin. Ainsi le train de vie de ces gens est complètement bouleversé. Dans certains cas, les habitants en masse fuient la terre natale pour chercher refuge dans d'autres pays voisins.

Les efforts inlassables des hommes de bonne volonté et des organisations humanitaires et pacifistes pour faire entendre la voix de la raison à ces malfaiteurs afin de contenir l'obstination aveugle et les dissuader (empêcher) de s'engager dans ces actes criminels, inhumains et barbares, restent infructueux (sans succès).

Mais les sages et les humanistes ne s'avouent pas vaincus, et ils s'efforcent à trouver une issue (une solution) à ce grand mal qui ronge la société humaine, car le monde est en grande agitation et reste sur le qui-vive ; nul n'est à l'abri des attaques terroristes. Armés de patience les bien-pensants ne désespèrent jamais. Ils croient pouvoir venir à bout de ce problème épineux par la grâce du Seigneur car ils ont une foi inébranlable en Dieu pour la sauvegarde de l'humanité. *(cont. on pg 4)*

N. Ghoorah

कटरा आर्यसमाज में स्वागत एवं सम्मान

डॉ० उदय नारायण गंगू, ओ.एस.के,आर्य रत्न - प्रधान आर्य सभा मॉरीशस

१९ मार्च २०१६ को कटरा आर्यसमाज (इलाहबाद, भारत) ने 'चेतना दिवस' पर एक भव्य समारोह का आयोजन किया था। सैकड़ों आर्य जन अपनी उपस्थिति से सभागार की शोभा बढ़ा रहे थे। उस उत्सव के मुख्य अतिथि के रूप में वहाँ पाई आर्यसमाज के प्रधान, श्री ज्ञान धनुकचन्द जी उपस्थित थे। उस शुभावसर के मुख्य अतिथि, कटरा आर्यसमाज के कार्याध्यक्ष एवं सचिव ने कार्यक्रम का शुभारम्भ दीप प्रज्ज्वलन से किया।

स्वागत-भाषण में कटरा आर्यसमाज के प्रधान, श्री गोपाल वरनवाल ने वेद-प्रचार में महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज की भूमिका पर अपने विचार प्रकट किये। तदुपरान्त भारतीय प्रथानुसार मुख्य अतिथि, श्री ज्ञान धनुकचन्द जी को शाल, पुष्पहार एवं श्रीफल प्रदान करके उनका स्वागत एवं सम्मान किया गया। इसी प्रकार का स्वागत वर्षों पहले कटरा आर्य समाज में आर्य नेता श्री मोहनलाल जी मोहित का हुआ था।

कार्यक्रम के प्रथम चरण में 'गंधर्व संगीत विद्यालय' के सदस्यों द्वारा एक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। दूसरे चरण में श्री ज्ञान धनुकचन्द ने अपने प्रवचन में कटरा आर्यसमाज के कार्यों की सराहना की और वैदिक साहित्य में उल्लिखित सेवा, दान, यज्ञ, संस्कार, संगठन, सत्संग, परोपकार आदि के महत्व पर प्रकाश डाला। साथ ही मॉरीशस में हिन्दी भाषा के प्रचार एवं प्रसार में, वैदिक धर्म और भारतीय संस्कृति की रक्षा में आर्यसमाज के योगदान का संक्षिप्त इतिहास प्रस्तुत किया। *शेष भाग पृष्ठ २ पर*

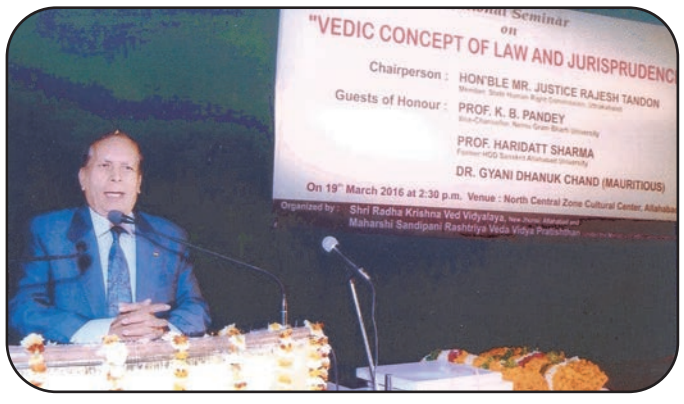

सम्पादकीय

सड़क पर असावधानी

हमारे देश का क्षेत्रफल बहुत सीमित है। इस देश की आबादी लगभग साढ़े बारह लाख की है। हमारे सभी देशवासी सड़कों को दैनिक इस्तेमाल करते हैं। हमारे रास्तों पर पदयात्री के अलावा ठेला-गाड़ी, साईकल, मोटर साईकिल, बसें, कारें, लारियाँ, वान आदि सवारियाँ दिन-रात गुज़रती रहती हैं, जिन कारणों से रास्तों पर नित्य चहल-पहल रहती है। ऐसी स्थिति में हम सभी नागरिकों को सड़क पर सावधान रहने की आवश्यकता है ।

यह बड़े ही हर्ष की बात है कि मॉरीशस की सड़कों पर लगभग चार लाख-सवारियाँ दौड़ा करती है, परन्तु खेद है कि दैनिक सड़क दुर्घटनाएँ बढ़ती जा रही हैं, जिनमें अनेक व्यक्ति घायल हो जाते हैं और कितने लोग बेमौत मारे जाते हैं। असंख्य निर्दोष राहगीर दुर्घटनाओं का शिकार हो जाते हैं और अपने परिवारों को दुखद अवस्था में छोड़ जाते हैं। इस गम्भीर स्थिति में हर एक व्यक्ति को सदा सर्तक रहना चाहिए, ताकि वह हर प्रकार की जानलेवा दुर्घटना से बच सके ।

हमारी सरकार अपने पुलिस विभाग की ओर से सड़क दुर्घटनाएँ कम करने की पूरी कोशिश कर रही है, मगर यह देखा जाता है कि राहगीरों तथा गाड़ी-चालकों की भूलों, लापरवाहियों और असावधानियों के कारण अक्सर दुर्घटनाएँ बढ़ती जा रही हैं। जिनकी दर्दनाक हालत देखकर हृदय काँप उठता है। दुर्घटना ग्रस्त परिवारों में मातम छा जाता है। यह कितने दुख की बात है कि गत साल १३९ लोगों की जानें सड़कों पर चली गईं और सैकड़ों व्यक्ति घायल हुए थे। इस वर्ष साढ़े तीन महीनों के अन्दर ४९ लोगों की मौत हो गई। अगर हम सभी नागरिक सड़क पर सावधान नहीं रहेंगे तो कितने लोग बेमौत मारे जाएँगे। अपने प्राणों की रक्षा करना हमारा धर्म है और दूसरों की जान बचाना मानव कर्तव्य है ।

असावधानी के कारण एक बड़ा-सा हादसा होना स्वाभाविक है। इसीलिए हर एक मुसाफिर को बड़ी सावधानी से सफर करना चाहिए। कभी भी जल्दबाज़ी में रास्ता पार नहीं करना चाहिए। प्रत्येक राहगीर अगर सड़क की दाईं ओर किनारे में चलें, गाड़ी-चालक तेज़ रफ्तार में चलाने की आदत न डालें तो दुर्घटना की नौबत अवश्य घट सकती है और सभी का सफर बड़े आनन्द के साथ पूरा होगा ।

यह ध्यान रहे कि अपनी यात्रा पूर्ण करने का सुगम साधन वाहन है। अगर हर एक आदमी सतर्कता पूर्वक अपने वाहन की जाँच पड़ताल करके निर्दिष्ट संकेतों (traffic signs) का ख्याल करता हुआ अपने वाहन का प्रयोग करेंगे तो अवश्य ही हमारी यात्रा सकुशल होगी।

जन्म का अटूट सम्बन्ध मृत्यु से है। जिसका जन्म होता है उसकी मृत्यु निश्चित होती है। हमारी जिन्दगी का सफर कब तक हो ? यह किसी को पता नहीं, परमात्मा ऐसा करे कि हमारी मौत स्वाभाविक दृष्टि से हो । हम दुर्घटना, हत्या, रोगों आदि का शिकार होकर बेमौत न मारे जाएँ। हम भवसागर में गोता लगाकर दीर्घकाल तक जीवित रहें ।

यह मानव तन बड़े भाग्य से मिला है, इसे लापरवाही के कारण नष्ट करना मानवता नहीं। हमें नित्य ऐसा व्यवहार करना चाहिए, जिससे अपने और पराये की रक्षा हो। किसी की बेमतलब मौत न हो। ईश्वर की कृपा से हम सभी दीर्घजीवी हों, ऐसी हमारी मनोकामना है ।

बालचन्द तानाकूर

ओ३म्

आर्य सभा मोरिशस

आर्य भवन, १,महर्षि दयानन्द गली, पोर्ट लुई, फोनः २१२-२७३०, फाक्स : २१०-३७७८

आर्य सभा मोरिशस की कार्यकारिणी समिति (अन्तरंग सभा) का गठन सन् २०१६-२०१७ ई० के लिए निम्न प्रकार हुआ है :-

प्रतिनिधि - सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली : प्रोफ़ सुदरसन जागेसर, *सी.एस.के., जी.ओ.एस.के, आर्य भूषण*

मान्य प्रधान : डा० रुद्रसेन नीऊर जी, *जी.ओ.एस.के,आर्य भूषण*

प्रधान : डा० उदयनारायण गंगू जी, *एम.ए.,पी.एच.डी,ओ.एस.के,आर्य रत्न*

उप-प्रधान : श्री हरिदेव रामधनी जी, *आर्य रत्न*

उप-प्रधान : श्री बालचन्द तानाकुर जी, *पी.एम.एस.एम,आर्य रत्न*

उप-प्रधान : श्रीमती धनवन्ती रामचर्ण जी, *एम.एस.के,आर्य रत्न*

मन्त्री : श्री सत्यदेव प्रीतम जी, *ओ.एस.के,सी.एस.के,आर्य रत्न*

उप-मन्त्री : श्री रवीन्द्रसिंह गौड जी

उप-मन्त्री : डा० जयचन्द लालबिहारी जी, *एम.एड.,पी.एच.डी*

उप-मन्त्री : श्रीमती यालिनी देवी रघु याल्लाप्पा जी, *बी.ए.,पी.जी.सी.ई*

कोषाध्यक्ष : श्री राजेन्द्र प्रसाद रामजी जी, *एम.एस.के., आर्य भूषण*

उप-कोषाध्यक्ष : श्री भोलानाथ जीऊत जी

उप-कोषाध्यक्ष : श्री भगवानदास बुलाकी जी

उप-कोषाध्यक्ष : श्री देवदत्त सोमना जी

पुस्तकाध्यक्ष : श्रीमती रत्नभूषिता पुचुआ जी,*एम.ए,पी.जी.सी.ई*

अंतरंग सदस्य : श्री प्रवीण बुधन जी

‘ : श्री धर्मजय दोमा जी

‘ : श्री धर्मवीर गंगू जी, *एम.ए,पी.जी.सी.ई*

‘ : श्री प्रभाकर जीऊत जी, *पी.डी.एस.एम*

‘ : श्री विवेदानन्द लोचन जी

‘ : श्री लेखराजसिंह रामधनी जी

‘ : पं० प्रदीप रामधनी जी

‘ : श्रीमती सती रामफल जी, *आर्य भूषण*

‘ : श्री रवीन्द्रदेव शीवपाल जी

‘ : श्री दिलराजसिंह तिलक जी

‘ : श्रीमती पूर्णिमा देवी सुकन तिलकधारी जी,*एल.एल.बी.*

पत्र व्यवहार निम्न पते पर करना चाहिए :-

मन्त्री.

आर्य सभा मोरिशस

१, महर्षि दयानन्द गली

पोर्ट लुई

२१२ २७३० (ओफिस)

५२५७३८१७ (मो०)

श्री सत्यदेव प्रीतम
मन्त्री

११/०४/२०१६

MANAGING COMMITTEE

The Managing Committee of Arya Sabha Mauritius for the year 2016-2017 has been constituted as follows :

REPRESENTATIVE OF SARVEDESHIK ARYA PRATINIDHI SABHA, N.DELHI : Prof. Soodursun JUGESSUR,*CSK,GOSK,Arya Bhushan*

HONORARY PRESIDENT : Dr. Roodrasen NEEWOOR,*G.O.S.K, Arya Bhushan*

PRESIDENT : Dr. Oudaye Narain GANGOO,*M.A,Ph.D,O.S.K,Arya Ratna*

VICE-PRESIDENT : Shri Harrydev RAMDHONY, *Arya Ratna*

VICE-PRESIDENT : Shri Balchan TANAKOOR, *P.M.S.M, Arya Ratna*

VICE-PRESIDENT : Smt. Danwantee RAMCHURN, *M.S.K, Arya Ratna*

SECRETARY : Shri Satterdeo PEERTHUM, *O.S.K, C.S.K, Arya Ratna*

ASST. SECRETARY : Shri Ravindrasingh GOWD

ASST. SECRETARY : Dr. Jaychand LALLBEEHARRY, *M.A, M.Ed, P.h.D.*

ASST. SECRETARY : Smt. Yalini Devi Rughoo YALLAPPA, *B.A, P.G.C.E*

TREASURER : Shri Rajendra Prasad RAMJEE, *M.S.K, Arya Bhushan*

ASST. TREASURER : Shri Bholanath JEEWUTH

ASST. TREASURER : Shri Bhagwandass BOOLAKY

ASST. TREASURER : Shri Deoduth SOMNA

LIBRARIAN : Smt. Rutnabhooshita PUCHOOA, *M.A, P.G.C.E*

MEMBERS : Shri Pravin BOODHUN

“ : Shri Dharmjay DOMAH

“ : Shri Dharamveer GANGOO, *M.A, P.G.C.E*

“ : Shri Prabhakar JEEWOOTH, *P.D.S.M*

“ : Shri Vivekanand LOCHUN

“ : Shri Leckrajsing RAMDHONY, *BSc*

“ : Pt. Pradeep RAMDONEE

“ : Smt. Suttee RAMPHUL, Arya Bhushan

“ : Shri Ravindradeo SEWPAL

“ : Shri Deelrazsingh TEELUCK

“ : Smt. Me. Poornima Devi SOOKUN TEELUCKDHARRY, LLB, Barrister at Law

All correspondences should be addressed to :-

The General Secretary, Arya Sabha Mauritius

1,Maharshi Dayanand Street, Port Louis

2122730 (Office No.)

52573817 (Mob No.)

Shri Satterdeo PEERTHUM
General Secretary
11/04/2016

पृष्ठ १ का शेष भाग

उन्होंने विश्व के सर्वप्राचीन ग्रन्थ ऋग्वेद के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इस पुस्तक में त्याग, दान, यज्ञ आदि का प्रभावशाली प्रतिपादन किया गया है। सत्य मार्ग पर चलने के लिए वेदों ने मानव को प्रेरणा दी है। कलियुग की अनेक आपदाओं एवं विपदाओं से पीड़ित समाज को वेद की शिक्षाओं की अत्यन्त आवश्यकता है। विश्व-शान्ति की स्थापना में वेदों का उपदेश ही पूर्ण रूप से सार्थक और सक्षम है।

आपने आगे बताया कि अगर वेद मंगलमय संदेश से परिपूर्ण है तो उपनिषद् चिंतन-मनन की शक्ति प्रदान करती है। कठोपनिषद् का अमोघ वाक्य ‘उतिष्ठत जाग्रत, प्राप्य वरान्निबोधत’ युगों से मानव जीवन में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता आ रहा है और भविष्य में भी करते रहेगा।

अपने प्रवचन के दौरान श्री ज्ञान धनुकचन्द जी ने आर्यसमाज के सदस्यों का ध्यान उस ओर आकृष्ट किया कि सभी उपस्थित श्रोतागण ५० वर्षीय या उससे ऊपर के हैं। युवक-युवतियों की अनुपस्थिति खटकने वाली बात है। आपने बताया कि युवा शक्ति एक महान् शक्ति के रूप में आर्यसमाज को आगे बढ़ाने में योगदान दे सकती है। अन्त में आपने समाज को विदेशीयत, बोलिवुद और धर्मान्तरण से सजग रहने को कहा। चिन्ता व्यक्त करते हुए आपने बताया कि किस प्रकार विदेशी धन से सेवा और शिक्षा के माध्यम से धर्मान्तरण का अभियान अनेक देशों में चल रहा है, जिससे हिन्दू धर्म को क्षति पहुँच रही है।

अन्त में कार्यक्रम के अध्यक्ष डा० बालकृष्ण पाण्डेय जी के आशीर्वचन द्वारा सभा का विसर्जन हुआ।

अपनी विदेश यात्रा के दौरान श्री ज्ञान धनुकचन्द जी ने ‘नई झूँसी रामकृष्ण वेद विद्यालय’ एवं ‘सांदीपनी वेद विद्यालय’ के सहयोग से आयोजित वैदिक सम्मेलन में भाग लिया। सम्मेलन में आपने वेद में कर्म सिद्धान्त (the law of Karma in the Vedas) पर एक आलेख प्रस्तुत किया। आपके प्रवचन की भूरि-भूरि प्रशंसा हुई।

वैदिक सम्मेलन के अलावा श्री ज्ञान ने चित्रकूट धाम में भी विशेष अतिथि के रूप में रामायण पर एक आलेख प्रस्तुत किया। ‘अमर उजाला’, ‘दैनिक जागरण’, ‘राष्ट्रीय जागरण’, ‘हिन्दुस्तान’, ‘इलाहबाद जागरण’ आदि समाचार पत्रों में आपके संदेशों पर रिपोर्ट छपी।

श्री ज्ञान जी ने अनेक संस्थाओं में अपने प्रवचनों द्वारा स्पष्ट किया कि विपरीत स्थितियों में भी मॉरीशस में वैदिक धर्म और भारतीय संस्कृति ईश-कृपा से कायम है। अपने पूर्वजों के त्याग और तपस्या से यह

सम्भव हो सका है। अतः आपने अपने पूर्वजों को शतशत नमन किया।

सम्मेलन के बाद स्पटिक शीला, गुप्त गोदावरी, सीताकुण्ड, मंदाकिनी नदी, कामगिरी (राम-भरत मिलन-स्थल), रामघाट, हनुमानधारा, प्रतापगढ़ (पाण्डव कालिन मन्दिर) छत्तीसगढ़ आदि धार्मिक स्थलों के दर्शन करने के बाद मॉरीशस लौटे।

हमारे सुधी पाठकों को विदित हो कि श्री ज्ञान धनुकचन्द जी भारतीय और पाश्चात्य दर्शन में एम.ए. की उपाधि से विभूषित हैं। भारतीय दर्शन के एम.ए. के पाठ्यक्रम के अन्तर्गत वैदिक वाङ्मय के साथ ही चार्वाक, जैन, बौद्ध और पुराण-दर्शन का भी अध्ययन करना पड़ता है। इस तरह एम.ए. के विद्यार्थी को त्रैतवाद, अद्वैतवाद, विशिष्टाद्वैतवाद आदि वादों का गहन अध्ययन करना पड़ता है। श्री धनुकचन्द जी लम्बे समय तक भारतीय दर्शन का अध्ययन-अध्यापन करते रहे हैं। फलतः वे आलेख प्रस्तुत करने के लिए अनेक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में आमन्त्रित

ARYODAYE
Arya Sabha Mauritius
1,Maharshi Dayanand St., Port Louis,
Tel : 212-2730, 208-7504, Fax : 210-3778,
Email : aryamu@intnet.mu,
www.aryasabhamauritius.mu
प्रधान सम्पादक : डॉ० उदय नारायण गंगू,
पी.एच.डी., ओ.एस.के., आर्य रत्न
सह सम्पादक : श्री सत्यदेव प्रीतम,
बी.ए.,ओ.एस.के,सी.एस.के.,आर्य रत्न
सम्पादक मण्डल :
(१) डॉ० जयचन्द लालबिहारी, *पी.एच.डी*
(२) श्री बालचन्द तानाकूर, *पी.एम.एस.एम, आर्य रत्न*
(३) श्री नरेन्द्र घूरा, *पी.एम.एस.एम*
(४) योगी ब्रह्मदेव मुकुन्दलाल, *दर्शनाचाय*
Responsibility for the information and views expressed, set out in the articles, lies entirely with the authors.
Printer : BAHADOOR PRINTING CO. LTD
Ave. St. vincent de Paul, Les Pailles,
Tel : 208-1317, Fax : 212-9038

इतिहास के अनमोल रत्न (पन्नों) से लाभ उठाए

विवाह मंगलगायन पुस्तक

आज यह जानकर हमारे आर्य बन्धु बहुत खुश होंगे क्योंकि आर्यसमाज के विवाह के उपलक्ष्य में मंगल तथा जन्म के अवसर पर वैदिक रीत्यानुसार सोहर गान करने में बहुत अड़चन सा प्रतीत होता था। इस हेतु से विवाह तथा जन्मोत्सव के लिए खास तौर पर कोई पुस्तक सहज में नहीं मिलती थी। जिस अड़चन को देखकर पं० गयासिंह जी जो अपनी स्वर्गीय भूत-पूर्व धर्मपत्नी श्रीमती भाग्यवती देवी का संग्रह तथा उसके द्वारा रचित ‘विवाह मंगल’ को प्रकाशित करके लोगों का कष्ट दूर किया है। पुस्तक की छपाई तथा साज-सज्जा खूब सुन्दर है। आर्य महिलाओं के लिए यह पुस्तक लाभदायक सिद्ध होगा। आशा है कि प्रत्येक आर्य बन्धु, अपनी-अपनी माता-बहनों के लिए एक प्रति अवश्य खरीद कर उन्हें भेंट करेंगे।

अतः पं० गयासिंह जी को इस परिश्रम के लिए हम कोटिशः धन्यवाद देते हैं।

आर्य वीर, २ अक्तूबर १९३६
प्रेषक प्रह्लाद रामशरण

महात्मा हंसराज का मूल उद्देश्य क्या था ?

पं० उम्मेद सिंह विशारद

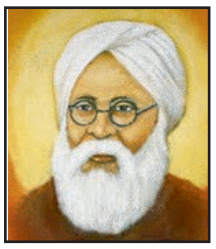

आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के परम शिष्य **महात्मा हंसराज जी** ने अखण्ड भारत किन्तु पराधीन लाहौर में १ जून १८८६ को डी.ए.वी. स्कूल की स्थापना की थी। लाहौर पंजाब की राजधानी थी। कुछ वर्षों बाद यह स्कूल कॉलेज बन गया। १९४७ में डी.ए.वी. कॉलेज के छात्रों की जनसंख्या किसी भी विश्वविद्यालय से कम नहीं थी, इसका प्रमुख श्रेय महात्मा हंसराज को जाता है। वह जीवन पर्यन्त डी.ए.वी. कॉलेज के प्रधानाचार्य रहे, किन्तु वेतन नहीं लिया।

महात्मा हंसराज जी का जन्म १९ अप्रैल सन् १८६४ को बजवाड़ा ग्राम होशियारपुर में हुआ था। बचपन से कुशाग्र बुद्धि के थे, प्रतिभाशाली थे, परिवार ने मिशन स्कूल लाहौर में भर्ती कराया और विपरीत परिस्थितियों के होते हुए मेधावी हंसराज ने बी.ए. द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण की। उन्हीं दिनों लाहौर में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का आगमन हुआ और उनके प्रवचन सुनने हंसराज जी जाया करते थे एक दिन प्रवचन का विषय था उत्तम मानव में क्या-क्या गुण होने चाहिए। महर्षि जी ने प्रवचन में कहा कि छः गुण धारण करने से मानव उत्तम हो सकता है। १. पठन-पाठन, २, उत्तम स्वभाव, ३. सत्य बोलने का व्रत, ४. अभिमान से रहित, ५. संसार के कष्ट दूर करने को हमेशा तत्पर रहना, ६. परोपकार के कार्यों में संलग्न रहना। इन गुणों से मनुष्य का जीवन सफल होता है। उसी दिन से बालक हंसराज के मन में इन प्रवचनों का गहरा प्रभाव पड़ा और निश्चय किया कि मैं आदर्श मानव बनूँगा।

३० अक्टूबर १८८३ को महर्षि दयानन्द जी दिवंगत (बलिदान) हुए। उनकी स्मृति में वरिष्ठ आर्यों से सर्व श्री हंसराज जी मुनिवर पंडित गुरुदत्त, लाल लाजपत राय, राजा नरेन्द्रनाथ, श्री द्वारिकादास आदि महानुभावों ने डी.ए.वी. (दयानन्द ऐंग्लो वैदिक) कॉलेज खोलने का सर्वसम्मति से निश्चय किया। धनाभाव के कारण डी.ए.वी. स्कूल चलाने में कठिनाई आ रही है। श्री हंसराज जी ने अपने बड़े भाई लाल मुल्कराज जी के सम्मुख अपने विचार रखे कि मैं अपना जीवन आर्यसमाज को देना चाहता हूँ। बड़े भाई ने सहर्ष स्वीकार कर लिया और कहा अपने वेतन का आधा ४० रुपये तुमको देता हूँ और इससे प्रेरित होकर ३ नवम्बर १८८५ को लाहौर आर्यसमाज के अन्तरंग सभा में सूचित किया कि मैं आजीवन अवैतनिक डी.ए.वी. स्कूल को अपनी सेवाएँ देना चाहता हूँ।

१ जून १८८६ को लाहौर में डी.ए.वी. स्कूल इनके प्रयास से ही डी.ए.वी. कॉलेज बन गया। उसके प्रधानाध्यापक के रूप में इन्होंने अपनी सेवायें देनी प्रारम्भ की और डी.ए.वी. कॉलेज को बहुत ऊँचा उठाया। विदेशी भी उनकी प्रतिभा के सामने नतमस्तक हो गये और सरकार से अनुदान लिये बिना दो वर्षों में महाविद्यालय में बदल दिया।

महात्मा हंसराज जी की प्रेरणा से अनेक युवक सादा जीवन खादी पहनावा के वेश में अपनी सेवाएँ देने लगी। श्री हंसराज जी ने डी.ए.वी. कॉलेज के प्रिन्सिपल एवं आर्यसमाज के प्रधान के रूप में ही नहीं वरन् एक सच्चे समाज सुधारक और कर्मवीर के रूप में सेवाएँ दी जो सदैव स्मरणीय रहेंगी।

महात्मा हंसराज जी १८९४ को आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के प्रथम प्रधान पद पर सुशोभित किया गया। १९२२ में लाहौर में महिला विश्वविद्यालय की स्थापना की। अधिक परिश्रम के कारण उनको पेट के रोग ने घेर लिया। उन्होंने महात्मा आनन्द स्वामी को प्रधान पद सौंप दिया। २० दिन की गम्भीर बीमारी के कारण १५ नवम्बर १९३८ को ७४ वर्ष की आयु में यह वीर पुरुष सदैव केलिए चिरनिद्रा में सो गया। महात्मा जी के परम शिष्य सिकन्दर हयात जो कि विभाजन से पूर्व पंजाब के मुख्यमन्त्री थे, महात्मा हंसराज जी के देहावसान पर शोक में मुस्लिम लीग के विरोध के बावजूद 'असैम्बली' को स्थगित कर दिया और कहा 'आज हम अनाथ हो गये है।'

महात्मा जी ने सारा जीवन देश सेवा और परोपकार में बिता दिया। दयानन्द ऐंग्लो वैदिक विद्यालय का मुख्य उद्देश्य कि पराधीन भारत में लार्ड माकोले ने भारत की शिक्षा व संस्कृति को पाश्चात्य में बदल दिया था और प्रत्येक शिक्षा विद्यालयों में परोक्ष व अपरोक्ष रूप से ईसाई धर्म का प्रचार होने लगा था, भारत के गुरुकुलों की स्थिति उतनी अच्छी नहीं थी जो इसका मुँह तोड़ उत्तर दे सके। यह कार्य डी.ए.वी. कॉलेज में होने लगा और हिन्दू संस्कृत के अतिरिक्त अंग्रेजी शिक्षा देकर देश भक्त युवकों को मुह तोड़ उत्तर देने के लिए तैयार करने लगे। फलस्वरूप डी.ए.वी कॉलेजों से राष्ट्र भक्त युवक-युवतियाँ बनने लगे और स्वतन्त्रता आन्दोलन के लिए तैयार रहने लगे। अंग्रेज़ सरकार ने अपने गवर्नरों को आदेश दे रखा था कि दोनों शिक्षा विद्यालयों पर कड़ी नज़र रखी जाये। महर्षि दयानन्द जी द्वारा रचित आर्यसमाज के क्रान्तिकारी संगठनों द्वारा राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आन्दोलन को चिन्गारी निकलने लगी। फलस्वरूप अस्सी प्रतिशत आर्यसमाजियों ने स्वतन्त्रता आन्दोलन में अपने गरम-गरम रक्त से बलिदान देकर भारत माँ का तिलक किया था। आज आवश्यकता है महात्मा हंसराज के उद्देश्य को पुनः कॉलेजों में प्रारम्भ करने की। प्रार्थना सभा में आठ प्रार्थना मन्त्र व समय समय पर यज्ञ करना तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित सत्यार्थप्रकाश व ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका ग्रन्थों का प्रचार करना आदि आदि। आचार्यों व विद्यार्थियों को अपनी सकारात्मक सोच बनानी होगी तभी शिक्षा का मूल उद्देश्य सफल होगा। भारत के समस्त जागरूक विद्वान् आर्यों को डी.ए.वी. कॉलेजों की वर्तमान स्थिति और महात्मा हंसराज जी के मूल उद्देश्यों को ध्यान में रखकर समीक्षा करके, डी.ए.वी. कॉलेजों की दशा व दिशा बदलने में आगे आना होगा।

Source : Tankara Samachar May 2015

टिप्पनी

महात्मा हंसराज जी ने अन्तिम समय में कुशहालचंद जी जो बाद में आनन्द स्वामी बने को मन की पीड़ा सुनाई की – 'डी.ए.वी. प्रबंद समिति में आर्यत्व पूर्ण जीवन वाले आर्य समाजी लोग कम होते जा रहे हैं, धर्मशीक्षा व वेद प्रचार की भावना कम होती जा रही है। आर्यसमाज के काम में शिथिलता व बिखराव आ रही है। इन बातों का ध्यान रखना ।' महात्मा हंसराज जी की इस अन्तिम पीड़ा एवं ईच्छा को हमें गंभीरता व ईमानदारी से उनपर मनन और चिन्तन करना होगा। हमें महात्मा जी की इन इच्छाओं की पूर्ति के लिए क्रियाशील होकर वैदिक प्रचार को आगे बढ़ाना है तभी महात्मा जी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

Contributed by Shri Harrydev Ramdhony, Arya Ratna, Vice-President, Arya Sabha

महान् हिन्दी प्रचारक

श्री अजामिल माताबदल अब न रहे

मॉरीशस के हिन्दी जगत् को सोमवार १४ मार्च २०१६ को सुबह यह दुखद समाचार मिला कि हिन्दी के महान् प्रचारक श्री अजामिल माताबदल जी का देहावसान हो गया। अजामिल जी देश के हिन्दी प्रेमियों के बीच एक सुप्रसिद्ध व्यक्ति थे। वे हिन्दी प्रचारक, शिक्षक तथा लेखक थे। उन्होंने हिन्दी के विकास के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया था।

श्री अजामिल माताबदल का जन्म मोर्सेल्माँ सें तांद्रे में हुआ था। उसी गाँव में पं० दौलत शर्मा जी ने हिन्दी पढ़ाई व कहें हिन्दी की साहित्यिक व व्याकरण सम्मत हिन्दी पढ़ाई के लिए पूरा प्रयत्न किया था। अजामिल जी उन्हीं गुरु से हिन्दी की शिक्षा पाकर अपने गुरु का नाम रोशन किया। वे सरकारी स्कूल के हिन्दी अध्यापक बने और खुद पं० दौलत शर्मा जी द्वारा चलायी जा रही हिन्दी पाठशाला में पढ़ाते भी थे। उस पाठशाला के बहुत से शिष्य-शिष्याएँ उत्तर प्रान्त में हुए अजामिल जी शिक्षा मंत्रालय द्वारा सायंकालीन व शनिवारीय-रविवारीय हिन्दी स्कूलों में निरीक्षण के लिए (इंस्पेक्तर निरीक्षक) भी नियुक्त हुए थे।

अजामिल जी लम्बे समय तक हिन्दी प्रचारिणी सभा के प्रधान रहे और हिन्दी की साहित्यिक पढ़ाई में नई जान डालने के लिए प्रयत्न करते रहे। देश भर में सभा द्वारा सैकड़ों हिन्दी पाठशालाएँ चलती हैं। शिक्षण, निरीक्षण तथा परीक्षण तथा प्रमाण-पत्र वितरण की व्यवस्था करनी पड़ती है। प्रधान होने के नाते इन सब कामों को व्यवस्थित व सुचारु रूप से चलाने के लिए उत्तरदायित्व भी निभाना होता है जिसके लिए समय भी देना पड़ता है। इन कामों में उन्होंने कोई कसर न छोड़ी।

माध्यमिक स्तर की पढ़ाई, प्रवेशिका से उत्तमा तृतीय खण्ड तक होती है । उसकी पाठ्य पुस्तकों में सुधार लाने के लिए माताबदल जी ने बहुत ध्यान दिया। उन्होंने चाहा कि मॉरीशस के लेखकों, कवियों द्वारा लिखित पुस्तकें भी पाठ्यक्रम में सम्मिलित हों। उन्होंने श्री लक्ष्मी प्रसाद रामयाद द्वारा अँग्रेज़ी में लिखित 'द एस्ताब्लिश्मेंट एण्ड कल्टिवेशन ऑफ़ मोडर्न हिन्दी इन मॉरिशस' का हिन्दी में अनुवाद किया और 'परिचय' परीक्षा के लिए पाठ्य पुस्तक के रूप में निर्धारित की गयी। फिर उन्होंने मोरिशस के कवियों द्वारा लिखित कविताओं का संग्रह 'हिन्दी काव्य प्रवेश' तथा कहानियों का चयन तथा संपादन कर मॉरीशस की हिन्दी सुगम कहानी शीर्षक से प्रकाशित की और प्रवेशिका परीक्षा के लिए निर्धारित हुई। इस तरह से अजामिल जी ने मॉरीशस के रचनाकारों को साहित्य में महत्व दिलाया।

अजामिल जी विश्व हिन्दी सचिवालय की शासी परिषद् के सदस्य थे। और सौभाग्य की बात है कि उनकी मृत्यु से पूर्व सन् २०१५ में भोपाल, मध्यप्रदेश में लगे १० वें विश्व हिन्दी सम्मेलन में वे सम्मानित थे। एक समारोह में उन्होंने हिन्दी के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करते हुए कहा था – *'मैंने हिन्दी की सेवा नहीं की, हिन्दी ने मेरी सेवा की। मैं बेरोज़गार था, हिन्दी ने मुझे और मेरे परिवार को रोजी-रोटी दी।'*

सोमवार १४ मार्च २०१६ को हिन्दी प्रचारिणी सभा, महात्मा गांधी संस्थान, आर्य सभा, विश्व हिन्दी सचिवालय, हिन्दी लेखक संघ, हिन्दी संगठन, इन्द्रधनुष हिन्दी परिषद्, हिन्दी साहित्य अकादेमी, इन्दिरा गांधी कलचरल सेंटर, इन्दिरा गांधी प्रकाशन समिति आदि के प्रतिनिधि बड़ी संख्या में मोर्सेलमाँ में अजामिल जी के स्थान पर उनको भाव-भीनी श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए आए हुए थे।

हम सब अजामिल जी के संतप्त परिवार को धैर्य बँधाने के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।

इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ
मान्यप्रधान हिन्दी लेखक संघ

सामाजिक गतिविधियाँ

नवसंवत्सर एवं आर्य समाज स्थापना दिवस

एस. प्रीतम

ओलिये कात्रबोर्न

ओलिये आर्य मंदिर में रविवार दिनांक १० अप्रैल २०१६ को सपहर दो बजे आर्य समाज स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में एक सुन्दर समारोह का आयोजन किया गया था। उसी मौके पर नवसंवत्सर भी घूमघाम से मनाया गया। उपस्थित थे आर्य सभा के प्रधान डा० उदयनारायण गंगू, महामंत्री श्री सत्यदेव प्रीतम, उपमंत्री रविन गौड तथा श्रीमती यालिनी यालाप्पा एवं रत्नभूषिता पुछुवा, विद्वानों द्वारा भाषण और भजन मण्डली द्वारा सुन्दर भजन पेश किये गये। कार्य का संचालन किया परिषद् मंत्री श्री सोनालाल रामदोस जी।

शेमें ग्रेन्यें में तीन समारोह एक बार

एक ही समय में और एक ही स्थान पर तीन समारोहों का आयोजन बिरले ही ठाना जाता है । नवसंवत्सर के परिप्रेक्ष्य में सावान आर्य ज़िला परिषद् ने आर्य सभा के तत्वावधान में नवनिर्मित यज्ञशाला का उद्घाटन, पहली मंजिल का उद्घाटन और स्थापना दिवस समोरोह पूर्वक मनाया । उस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में राष्ट्रीय सभा की अध्यक्षा श्रीमती शान्ति बाई हनुमान जी ने अपनी उपस्थिति देकर कार्य की शोभा बढ़ाई। याद रहे कि नयी निर्मित यज्ञशाला का नाम दिया गया 'डा० उदय नारायण गंगू यज्ञशाला' और हरेक नव कमरे के निर्माण कार्य में १५ लोगों ने ५०-५० हज़ार रुपये दिये जिनके नाम नामपट हरेक कमरे की चौखट के ऊपर लगाये गये । इसी प्रकार लोगों के दान से आर्यसमाज आगे बढ़े यही हमारी शुभकामना है

मार लाशो में गायत्री महायज्ञ

फ्लाक ज़िले के मार लाशो गाँव के आर्य मंदिर के बाजू में विशाल पण्डाल बनाकर ९ दिनों तक गायत्री मंत्र से २४,००० आहुतियाँ डाली गईं। पर्यावरण की कितनी शुद्धियाँ हुई होंगी। यह सोचने का विषय है।कितना फायदा आध्यात्मिकता की दिशा में हुआ होगा यह भी कल्पना करने की बात है। सुबह-शाम के सत्रों में कितने भजन और भाषण हुए होंगे। इन सब से क्या प्रभाव पड़ा होगा लोगों पर। यह गंभीरतापूर्वक आकलन करने की बात है । दाताओं के दान से दोनों समय लोगों को भोजन से सत्कार किया गया।

Arya Samāj : Legacy from Maharishi Dayanand Saraswati

Maharishi Dayanand's vision

The Arya Sam j is the greatest legacy of Maharishi Dayanand Saraswati. The 'Ten Principles' of Arya Sam j' reflect his vision of mankind. In fact, he lived these principles. The first three principles echo his conviction about the supremacy of the Vedas and the other seven expound his farsightedness towards peace and social harmony. He was a great believer in elevating man …to Human Being.

Sandhyā & Havan

He spelled out the need to perform 'Brahma Yajna' (Sandhy) as meditation upon the Lord and as medium to recover our physical, mental/ moral/ spiritual and social balance; and 'Agnihotra' (Havan) as a reminder that it is the moral duty of every human being to leave a legacy in the form of pure water, unpolluted air and unpolluted society. Havan is an excellent source of eradicating man made contaminants from the atmosphere. The mixture of herbs and ghee offered as oblations generate vapours that repel / annihilate harmful bacteria and viruses and promote wellness. On the gross level, Agnihotra is a fumigation process and on the subtle level it brings us back on track, i.e. connect with our spiritual reality. It should be performed on daily basis.

Maharishi Dayanand laid the foundation of Arya Sam j in the Month of Chaitra (March/April) in 1875 with the purpose of propagating the mission of disseminating Vedic knowledge, which was two-fold *(i) to educate the people to accept the supremacy of one godhead who is Creator, Ruler and father of the Universe, and (ii) to free mankind from the shackles of ignorance and the ethos of superstition.* Ignorance and superstitions are two close friends walking together. It is a global issue. The starting point of any action is: Focus on the honest performance of self-introspection. Only then we shall be empowered with discriminative intellect *(medhā buddhi)* to chalk out a sustainable program or project and consolidate our willingness to carry this mission in the right direction.

The light of knowledge

Swamiji handed a torch to us together with his written testament in the belief that we will fulfil his lofty objective. No doubt, we have carried that torch from the land it was lighted to various parts of the world.

We need yet to discharge our moral duty – an obligation to this great sage who gave his life for the uplift of the physical, moral and spiritual standards of mankind. We need give a thought as to how we can dispel this ever growing multi-faceted ignorance from among mankind.

Ignorance : the absence of the light of true knowledge

All would agree that ignorance as darkness can only be dispelled by lighting a candle. Let us move it to a place where it is most needed: to a place which is engulfed in darkness / to a place where ignorance is breeding in the company of *Avidyā*. And the best such place in my opinion is the field of education.

Arya Samāj: the legacy of its founder Maharishi Dayanand

Maharishi Dayanand Saraswati has left a legacy for us. We have to prove ourselves worthy of his trust in us. ***May we listen to mind-blowing message calling us to be karma yogis, i.e. more actions and lesser words!*** Let us shake the slumber and in the light of his inspiration move to the direction he has indicated: *'manurbhava'* (transform the social animal into social being).

Learn from our glorious past

Many kindled that spirit; amongst whom Swami Shraddhanand, Mahatma Hansraj and Pundit LekhRam exemplified commitment. Faithful to the principles of the Arya Samāj, stalwarts of this movement established various educational institutions (Gurukuls, DAV Schools & Colleges …etc.)

We need to be faithful to truth, virtue, our duties and responsibilities… the inner voice within us should be inspiring us to move ahead… without any inner feeling of guilt *(sans remord de conscience)*… Then only we shall honour this great soldier of light… Actions speak for themselves… and the greatest noise comes from hollow drums …Critics need first to look at themselves in the mirror… Positive / constructive critics are welcomed… Negative or diminutive critics, i.e. the hollow drums, should be left to their conscience and to the Justice of the Almighty… *Ishvara nyāya karegā*

A real tribute to the great master, Maharishi Dayanand

We should commit ourselves to prepare people, especially youngsters, as torches aglow with education graced with the Vedic knowledge to further disseminate the Vedic ideals worldwide.

May the principles of the Arya Sam j lead our spirits to act in a pure, unspoilt, unmodified manner and help to bring back to track our life especially in an era where we need pure energy, high clearness, the penetrating eye, the noble and dominant sincerity.

Yogi Bramdeo Mokoonlall, Darshanāchārya
Arya Sabha Mauritius

cont. from pg 1

Interprétation / Anushilan

Ce verset du Rig Véda est une prière pour une occasion spécifique face à un problème grave.

L'histoire témoigne qu'à chaque époque où il y a eu la dégradation de la moralité (*adharma*), l'escalade de la violence, l'injustice et d'autres fléaux qui menaçaient le monde, de grandes âmes se sont pointées pour sauver l'humanité. Raaja Harishchandra, Shri Raama, Shri Krishna, Maharishi Dayaanand et tant d'autres ont laissé leurs empreintes indélébiles comme des exemples pour inspirer l'humanité.

Le Véda (l'ensemble des quatre livres sacrés) est un don précieux (d'une valeur inestimable) de la part de Dieu. Les connaissances Védiques sont indispensables pour le salut de toute l'humanité. Le Véda contient toutes les connaissances mondaines (la science, le savoir-vivre) et la spiritualité (la dévotion entre autres). Y-est aussi inclu des prières appropriées pour éclairer, aider, encourager et protéger les fidèles dans les différentes circonstances de la vie et surtout pendant des moments pénibles.

Le monde passe actuellement par une tourmente suite aux actes répréhensibles, tels que la violence, le désordre, le banditisme, les crimes, la malhonnêteté, la persécution, la discrimination, la fraude, la corruption, la convoitise, la dégradation des mœurs, l'injustice, la haine, le préjudice, l'ambition démesurée des démagogues et des assoiffés de pouvoir, l'escroquerie et des attaques terroristes de la part des extrémistes 'dites' religieux.

Ces activités monstrueuses constituent une menace sérieuse de la décimation de la société humaine. L'effritement des normes et des valeurs visent à instaurer la dictature en déstabilisant des gouvernements démocratiquement établis.

Cette situation nous interpelle tous. Nous faisons de notre mieux pour calmer les esprits des malfaiteurs, afin de faire cesser la violence, les crimes et autres méfaits. Mais, nous n'y arrivons pas. Un climat de désespoir règne parmi beaucoup. Malgré les obstacles qui paraissent infranchissables nous n'abandonnons pas l'espoir de venir à bout de ce problème afin d'assainir la situation.

En ce moment de détresse parmi les gens, nous les croyants, nous tournons vers Dieu pour notre salut. Il nous a transmis ce message d'espoir par ce verset du Rig Véda :

"O Dieu éternel, tout-puissant, immortel ! Tu es le maitre suprême de l'univers, le soutien et le Seigneur de tous ! Nous nous en remettons à toi ! Nous sollicitons ta bénédiction ! Nous t'offrons une sincère prière, suppliant la sauvegarde de l'humanité qui fait face à une grande calamité. Nous espérons qu'elle sera exaucée.

De grâce, faites rejaillir en nous la vertu et autres qualités qui feront de nous des êtres humains, de grandes âmes ou des modèles à d'autres.

Que l'intelligence, la vertu, la capacité de discerner le bien du mal …la vérité du mensonge …le sens du devoir de l'attitude irresponsable …fera de ce monde un monde meilleur où règnera l'ordre, la discipline, la paix, la moralité, la spiritualité, l'amour, la justice, l'honnêteté …les valeurs Védiques – les valeurs humaines universelles!"

Message from Dr. O.N. Gangoo, President, Arya Sabha Mauritius on the occasion of the birthday anniversary of Mahatma Hansraj

Mahatma Hansraj, Founder of D.A.V. College

(19.04.1864 - 14.11.1938)
Childhood name : **Lala Hansraj**

Mahatma Hansraj was a high-profile educationist & stalwart of the Arya Samaj movement. Along with Gurudatta Vidhyarthi, Hansraj founded the first D.A.V. College in Lahore in 1886, in memory of Dayanand who had died three years earlier. He was also a compatriot of freedom fighter Lala Lajpat Rai.

D.A.V. College was set up with a holistic approach to education: values-based education became an essential component to the physical, moral and social development of all.

Mahatma Hansraj served as the principal of D.A.V. College for 25 years …on voluntary basis, without pay and …committed the rest of his life to social service. He sustained his family through the generosity of his elder brother who gave him Indian Rupees 40 (forty) monthly - half of his salary.

Early life and education

Hansraj was born in a small town, Bajwara, in Hoshiarpur district, Punjab. His father died before Hansraj was 12 and thereafter he was looked after and educated by his elder brother. Subsequently his family moved to Lahore where he joined a missionary school. Meanwhile, he heard the lecture of Swami Dayanand and this changed his life course forever. The salient points of that discourse which struck him as lightening were: (1) Regular reading / study; (2) The best character; (3) Speak only the truth; (4) Be free from pride; (5) Be ever ready to alleviate the suffering of others; (6) Join efforts to do good to others.

Upon completing his B.A., Hansraj could have taken up a job. But he decided to start a school, the first D.A.V. school, along with a fellow Arya Samajist, Gurudatta Vidyarthi. Later Hansraj became the Principal of the Dayanand Anglo-Vedic College, Lahore, and President of the provincial Arya Pradeshik Pratinidhi Sabha, the D.A.V. section of Arya Samaj in Punjab.

Legacy

Today, with a network of over 700 colleges, schools, professional and technical institutions, DAV Colleges (India) is the second largest network of educational institutions in India (1st one is the Government of India). Many high officials of the Government of India and elsewhere in the world earned their status due to the values inculcated during their passage at the D.A.V colleges. Many educational institutions are named after him, including Hans Raj College, Delhi University, situated at the heart of the University's North campus.

Mahatma Hansraj is known as :

(1) ***The Maker of the Modern Punjab*** for his contribution in the field of education – access to education changed the life of people from where emerged a new middle class.

(2) ***The motivating Mahatma*** *(noble soul)* for his dedicated voluntary services to D.A.V. Colleges and in the field of social work.

(3) ***The perfect motivator of men par excellence.*** He achieved the unachievable through perfect teamwork where every member of the team carried on his duties assigned by Mahatma Hansraj as if it was a struggle for his own survival.

Mahatma Hansraj led the country from the darkness of ignorance to the enlightenment of knowledge. Mahatma Hansraj practiced what he preached :

1. Sandhya – prayer to the Almighty & meditation.
2. Swadhyaya – study of the scriptures and introspection, the bench mark for introspection were the universal values of Dharma (righteousness.)
3. Satsangh – congregational meetings where people would pray together, share experiences, knowledge …etc.
4. Swadesh - loyalty to the motherland, use of locally produced food, clothing & other items.
5. Sewa – selfless service to mankind

No wonder Sir Shahabuddin, Speaker of the Punjab Legislative Assembly of undivided India and an ex-DAV School student spoke thus on the demise of Mahatma Hansraj:

``When my father died, I became fatherless, When my mother died, I became motherless, Today on the death of Lala Hansraj, I am Reduced to the state of an ORPHAN."

Mauritius Arya Yuvak Sangh

11 April 2016: Training Session on Creative Thinking and Self-Leadership

Dharamveer Gangoo, President M.A.Y.S.

The Mauritius Arya Yuvak Sangh (MAYS) organized a one-day training on Creative Thinking and Self Leadership for Youth of the districts of Grand-Port and Savanne at the Vedic Centre at Trois Boutiques - Union Vale. The training session was opened by a prayer.

In his welcome address, the President of the MAYS, Shri Dharamveer Gangoo talked on the importance of the workshop which aims at empowering youth to assume leadership roles in a near future. Shri Himesh set the mood of the audience with two bhajans (devotional songs). The resource person of the day was none other than Yogi Bramdeo Mokoonlall, Darshanacharya. He impressed all the participants by his delivery alternating languages-Hindi, English, French and Creole. Both sessions were interactive and very lively.

There is no denial to the fact that today in this fast moving world, our youth tend to more-than-often swerve from the right path. They believe that values are found somewhere in a decrepit hospital. It is still time to nurture our youth to become good and responsible citizens... better late than never!!!

Good leaders need to be role models, with a creative mind and ability to influence the group towards a common goal. Yogi Bramdeo ji stressed that leaders should know and practice the 10 tenets of Dharma as these are the one-and-only set of Universal values that none may deny.

Feedback at the end from all the participants who were given ample opportunity to express themselves reveal that they were fully satisfied. Some teachers too attended the training sessions and their input were invaluable. It is planned that a follow-up and deepening session would be held during the winter school vacation.

The MAYS intends to further carry such enlightening activities in the other districts shortly.

MAN'S PASSAGE ON EARTH

Out of space and astral world man lands at Terminal B (Birth), i.e. he is born to transit on earth and after completing his life cycle, he goes to Terminal D (Death) to depart for the astral world again from where he has come.

Philosophically speaking, man has a short cycle, like the seven days of a week to live on this planet.

Day 1 (Monday): He is born – arrival at Terminal B.
Day 2 (Tuesday): He goes to school.
Day 3 (Wednesday): He gets married.
Day 4 (Thursday): He begets children.
Day 5 (Friday): He celebrates the marriage of his children.
Day 6 (Saturday): He becomes old and sick.
Day 7 (Sunday): He dies – departs from terminal D.

So the present life is but a transit on earth... The eternal journey continues... Only the memories of his good actions remain alive.

Dipnarain Beegun